P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

समुद्रमंथनोपाख्यान

सारांश

महर्षि वेदव्यास ने महाभारत की रचना की थी। महाभारत में १८ पर्व है। पर्व में उपपर्व भी आते है। उपपर्व का अध्याय मे विभाजन किया हुआ है। आदि पर्व मे १६ उपपर्व है, २२५ अध्याय मिलते है। आदिपर्व में १६ से १७ अध्याय तक समुद्र मंथनोपाख्यान आता है। अध्याय १६ मे १–१६–१ से १–१६–४० यानिके ४० श्लोक, अध्याय १–१७–१ से १–१७–३० यानिके ३० श्लोक इस तरह कुल ७० श्लोक समुद्रमंथनोपाख्यान में मिलते है।

मुख्य शब्द : समुद्र मंथन, राहु केतु उत्पत्ति, मोहनी अवतार।

अनिल कुमार बी. माछी
सहायक प्राध्यापक,
संस्कृत विभाग,
पंचमहल्स आर्ट्स कॉलेज,
देवगढ़ बरिया, दाहोद,
गुजरात, भारत

प्रस्तावना

शौनक अश्वराज उच्चैःश्रवा को देखकर उसकी उत्पति कथा और सभी देवताओं ने कहा और कैसे समुद्रमंथन किया था, वह सब सूतमुनि को पूछते है। यह सब कथा सूतमुनि शौनक को कहते है। दैत्य, असुर तथा दानव उस समय बहुत प्रबल थे। उन सभी को शुक्राचार्य की शक्ति प्राप्त थी। उस समय दुर्वासा ऋषि के शाप से देवराज शक्तिहीन हो गये थे, इसलिण असुरों का राज्य तीनों लोक पर था। इन्द्र सहित सभी देवगण इन असुरों से भयभीत थे। इस परिस्थिति के उपाय का निवारण सिर्फ वैकुंठनाथ विष्णु ही दिखा सकते है। इसलिण ब्रह्माजी के साथ सभी देवता भगवान नारायण के पास गये और उनको अपनी विपत्ति बताई, तभी भगवान मधुरवाणी में बोले कि यह समय आपके लिए संकटकाल है। लेकिन संकट के समय मैत्रीपूर्ण भाव से विचार करना चाहिए। दानवों के साथ मित्रता कर लो, समुद्र मंथन करके उसमें से अमृत प्राप्त कर उसका पान करके शक्तिशाली अमर बन जाओ। शक्ति प्राप्त होते ही दैत्यों को हराने या मारने की सामर्थ्य आ जायेगी।

भगवान के आदेशानुसार इन्द ने समुद्र मंथन में से अमृत प्राप्त करने की बात दैत्यों को बताई और दैत्यराज देवराज इन्द्र के साथ मिलकर समुद्र मंथन के लिए तैयार हुए।

मन्थानं मन्दरं कृत्वा तथा नेत्रं च वासुकिम्।
देवा मथितुमारब्धाः समुद्रं निधिमम्भसाम्।
अमृतार्थिनस्ततो ब्रह्मन्सहिता दैत्यदानवाः।।[१]

अर्थात्– देवों और दानवों न अमृत प्राप्ति के लिए मंदर पर्वत को मथानी बनाकर और वासुकि सर्प (नाग) की रस्सी बनाकर जल के भंडार समान समुद्र का मंथन शुरु किया।

मंदराचल पर्वत मंथनी, वासुकि नाग को रस्सी बनाकर भगवान विष्णु स्वयं कछुआ का अवतार लेकर मंदराचल पर्वत को अपनी पीठ पर रखकर उसका आधार बन गये। नारयण भगवान ने दानव रुप से दानवों और देवता रुप से देवताओं में शक्ति का संचार किया। वासुकिनाग को गहन निद्रा देकर उसका कष्ट मिटा दिया। द्रुष्ट बुद्धिवाले दानवों ने कुछ लाभ होगा ऐसा मानकर वासुकी नाग के मुख कि तरफ पकड़ा और देवताओं ने पूंछ भाग पकड़ा।

समुद्रमंथन का आरंभ हुआ, भगवान कश्यप की एक लाख योजन पीठ पर मंदराचल पर्वत घूमने लगा। इस के कारण अनेक जड़चर प्राणीओ की मृत्यु हुई, अग्नि उत्पन्न होकर जलने लगी। समुद्रमंथन में से सबसे पहले विष निकला, उस विष की ज्वाला से देवता और दानव जलने लगे, उसकी कांती झाँखी पडने लगी। बाद में सती को मिलकर भगवान

शंकर को प्रार्थना की और शंकर विष पी गये, लेकिन भगवान

शंकर ने विष को गले के अंदर यानि कण्ठ के नीचे नही उतरने दिया। कालकूट विष के प्रभाव से भगवान विष का कण्ठ नीला हो गया, विष के पान के बाद समुद्र मंथन पूरा हुआ।

ततः शतसहस्त्राषुः समान इव सागरत्।
प्रसन्नभाः समुत्पन्नः शीतांशुरुज्जवल।

अर्थात्– समुद्र में से हजारों किरणों के समान तेजस्वी और सुन्दर, प्रकाश बिछावनार चंन्द्र की उत्पति हुए।

दूसरा रत्न कामधेनु गाय निकली जिसको ऋषिओं ने अपने पास रखी। बाद में उच्चैःश्रवा अश्व निकला जिसको दैत्यराज बली ने अपने पास रखा। बादमें ऐरावत गज निकला जिसको इन्द्रने अपने पास रखा। उसके बाद कौस्तुभमणि निकली जिसको भगवान विष्णु ने धारण की। रम्भा नाम की अप्सरा निकली जिसको देवलोक में रखा गया। लक्ष्मीजी मंथन में से उत्पन्न हुए जिसने भगवान नारायण को अपना पति स्वीकार किया। उसके बाद परिजातवृक्ष और शंख भी निकले थे।

धन्वन्तरिस्तत्तो देवो वपुश्मानुदतिष्ठत।
अमृतार्थो कमण्डलु बिभ्रदमृतं यत्र तिष्ठति।।[३]

अर्थात्–शरीर धारण करके धन्वतरी एक श्वेत कमंडल लेके बाहर आया जिसमें अमृत भरा हुआ था। धन्वतरी के हाथ से दानवों ने अमृत का घट छींन लिया। और अमृत के लिए एक–दूसरे से संघर्ष करने लगे। उसके बाद विष्णुजी ने देवताओं को निराश हुए देखा।

तत्तों नारायणो मायामास्थितो मोहिनी प्रभुः।
स्त्रीरुपमभ्दुतं कृत्वा दानवानाभिसंश्रतः।।[४]

अर्थात्–उस समय भगवान विष्णु ने माया का आश्रय लेकर मोहिनी स्वरूप अपूर्व स्त्री रूप धारण किया और उनके पास पहुँच गये।

वो मोहिनी का रूप देखकर देवों–दानवों की बात ही क्यां ? देवो और दानवों ने मिलकर अमृतपान करने का निर्णय लिया। उन्होंने कहा कि वो मोहिनी जिस प्रकार अमृत बाटेंगी उसी तरह वह अमृतपान करेगें। तुम यें अमृतघट ले जाओ और हमारे बीच रहकर अमृत को बाटो। विश्वमोहिनी ने अमृत के घट को अपने हाथ में ले लिया और देवों तथा दानवों को अलग–अलग कतार में बैठ जाने के लिए कहा। उसके बाद दैत्यों को अपने कटाक्षरूप में मदहोश करके देवताओं को अमृतपान कराने लगी। दैत्यो भी मोहिनी के रूप में इतने मदहोश और पागल हो गए की अमृतपान करना ही भूल गए। भगवान के इस छल–कपट को राहु नामक दैत्य समझ गया।

तत पिबत्सु तत्कालं देवेश्वमृतमीप्सितम्।
राहुर्विबुधरूपेण दानवः प्रापिबत्तदा ।।[५]

अर्थात्–जब सभी देवता अमृतपान कर रहे थे तब उसी समय राहु नाम का एक दानव देवता का स्वरूप धारण करके अमृतपान करने लगा।

अमृत राहु के कंठ तक चला गया था उसी समय चन्द्रमा और सूर्य ने आवाज दी कि ये राहु नामक दैत्य है वह सुनकर भगवान विष्णुने अपने सुदर्शन चक्र से राहु का मस्तक शरीर से अलग कर दिया। अमृत के प्रभाव से राहु नामक ग्रह बन गया और अंन्तरिक्ष में स्थापित हो गया इस भेद भाव से प्रेरित हो कर राहु सूर्य और केतु चन्द्रमा को ग्रहण करता है।

इस तरह देवताओं को अमृतपान कराके भगवान विष्णु चले गए। दैत्य अत्यन्त क्रोधित होकर देवता पर प्रहार करने लगे। भयंकर देवासुर संग्राम का आरंभ हुआ। इस भयंकर युद्ध में सुवर्णमाला से सुशोभित असुरो के मस्तक भयानक शस्त्रों के प्रहार से शरीर से अलग हो कर गिरने लगे। इस युद्ध में देवोने विजय प्राप्त कर लिया। बादमें मन्दराचल पर्वत का सन्मान उसके मूल स्थान पर रख दिया। उसके बाद देवों हर्षनाद करते हुए अपने स्थान पर चले गये।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य समुद्रमंथनोपाख्यान का विस्तृत अध्ययन करना है।

निष्कर्ष

यह कथा असत्य पर सत्य के विजय को दर्शाती है। पुरूषार्थ से रत्नों की प्राप्ति को भी यह कथा दर्शाती है। यह कथा दर्शाती है कि भगवान् की माया के सामने देव मानव और दानव विवश है।

अंत टिप्पणी

1. *Bansal, Sunita Pant. Hindu gods and goddesses. Smriti Books, 2005.*
2. *Dey, Arundhati, and M. Phil Scholar. "www. expressionjournal. com ISSN: 2395-4132."*
3. *Lakshmi, Raja Ravi Varma'S. Gaja, Diwali Navratri, and Maha Vishnu. "Goddess Lakshmi."*
4. *Ganguli, Kisari Mohan, and John B. Hare. "The Mahabharata of Krishna-Dwaipayana Vyasa Translated into English Prose Adi Parva (First Parva, or First Book)." (1992).*
5. *महर्षि व्यास महाभारत आदिपर्व १६–१२*
6. *महर्षि व्यास महाभारत आदिपर्व १६–३३*
7. *महर्षि व्यास महाभारत आदिपर्व १६–३७*
8. *महर्षि व्यास महाभारत आदिपर्व १६–३६*
9. *महर्षि व्यास महाभारत आदिपर्व १७–४*